मंत्रों द्वारा रोग निवारण

डॉ० इन्दिरा जुगरान
एसो०प्रोफेसर-संस्कृत
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ऋषिकेश

सृष्टि से पहले जब कुछ नहीं था तब एक ध्वनि मात्र थी। वह ध्वनि अथवा नाद था - ओउम् किसी शब्द विशेष का सतत् उच्चारण अर्थात् मंत्र। मंत्र में शब्द था, स्वर था अर्थात् मंत्र शब्द और स्वर पर आधारित था। मंत्र ऐसे दिव्य शब्दों का समूह है जिसे दृढ़ इच्छा शक्ति पूर्वक उच्चारण एवं मनन से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं। चुने हुए गुप्त शब्द ही मंत्र हैं। इनमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है, कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारण मात्र से शून्य महाकाश में एक विचित्र कम्पन्न उत्पन्न होती है, जिसमें अभीप्सित कार्य सिद्धि एवं रचनात्मक प्रबल प्रच्छन्न शक्ति होती है :-

"मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः।
जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्न संशयः।।"

किसी शब्द का उच्चारण एक निश्चित लय में करने पर विशिष्ट ध्वनि कम्पन्न 'ईथर' के द्वारा वातावरण में उत्पन्न होते हैं। यह कम्पन्न धीरे-धीरे शरीर की विभिन्न कोशिकाओं पर प्रभाव डालते हैं। विशिष्ट रुप से उच्चारण किये जाने वाले स्वर को योजना वद्ध श्रृंखला ही मंत्र बन कर मुंह से उच्चारित होने वाली ध्वनि कोई न कोई प्रभाव अवश्य उत्पन्न करती है।

मंत्र ध्वनिनाद पर आधारित है। नाद शब्दों और स्वरों से उत्पन्न होता है। यदि कोई गायक-साधक मंत्र का जानकार है तो वह ऐसा स्वर उत्पन्न कर सकता है जो निश्चित रुप से प्रभाव शाली हो। किसी शब्द की अनुप्रस्थ के साथ जब लय बद्ध हो जाती है तब वह प्रभाव देने लगती है, यही मंत्र का सिद्धान्त है। इसीलिए कोई मंत्र जप निरंतर एक लय, नाद, आवृत्ति विशेष में किए जाने पर वह कार्य करता है। मंत्र के साथ-साथ उसका शुद्ध उच्चारण तथा लय-नाद-आवृत्ति की अनुसरण करना आवश्यक

है तब ही मंत्र प्रभावी सिद्ध होगा। मंत्र से अनिष्ट कारी योगों एवं असाध्य रोगों का नाश होता है तथा सिद्धियों की प्राप्ति होती है। अथर्ववेद चतुर्थ काण्ड का 13 वां सूक्त तथा ऋग्वेद के दशम मण्डल का 137 वां सूक्त रोग निवारण सूक्त के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें ऋषि ने रोग मुक्ति के लिए ही देवों से प्रार्थना की है –

त्रायन्तामिमं देवास्त्रायन्तां मरुतां गणाः।
त्रायन्तां विश्वा भूतानि यथायमरपा असत्।।

(हे देवा! इस रोगी की रक्षा करें। हे मरुतो के समूह! रक्षा करें। सब प्राणी रक्षा करें। जिससे यह रोगी दोष रहित हो जाए।)

रोगों के निवारण से सम्बद्ध मन्त्र और उनका प्रयोग निम्नवत् है :–

(1) ज्वर निवृत्ति के लिए–

ऊँ भस्मायुधाय विद्ममहे एक दंष्ट्राय धीमहि।
तन्नो ज्वरः प्रचोदयात।।[1]

उपरोक्त मंत्र की उत्पत्ति संहारोत्पत्ति क्रम से 7 दिन तक जप स्वयं करने से अथवा 21 दिन तक दूसरे विद्वान से जप कराने से सभी प्रकार का ज्वर ठीक हो जाता है।

(2) भूत प्रेत बाधा की निवृत्ति के लिए–

स्याने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघा।।[2]

उपरोक्त मंत्र का सवा लाख जप करके सर्वप्रथम सिद्ध करना आवश्यक है। पश्चात् उपर्युक्त मंत्र काम करता है। भूत प्रेत आवेश होने पर मिट्टी के किसी शुद्ध पात्र में गंगा जल लेकर 7 बार उपर्युक्त मंत्र को बोलकर उसमें दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली को फिरा दें। फिर उस जल में से थोड़ा सा रोगी को पिला देना चाहिए। शेष जल रोगी के समस्त अंगों पर छिड़क देना चाहिए। जब तक रोगी की भूत–प्रेत बाधा शान्त न हो, तब तक प्रतिदिन दो बार इस प्रयोग को करना चाहिए।

(3) शूल निवृत्ति के लिए

ऊँ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भवः।
परमे वृक्षऽआयुधं कृतिंवसानऽआचार पिनांक विभ्रदागहि।।[3]

उपरोक्त मंत्र का पाठ अथवा जप करने से मनुष्य के दर्द दूर हो जाते हैं।

(4) सर्प विषनाशक मंत्र–

गरुड़ास्य मंत्र ऊँ सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रिवृतो
शिरो गायंत्र चक्षुर्बृहद्रयन्तरेवक्षी।
सोम मरुत्मांस्त्रिवृतो शिरो गायंत्र चक्षर्बृहद्रयन्तेरवक्षी।
सोम आत्माछन्दास्यंकानि यजूं विषनाम।
साम ते तनुर्वामदेव्यं यज्ञ यज्ञियम्युच्छन्धिष्ठायाऽशम्या
सपुर्णोसि गुरुश्रम मान्दिवं गच्छ स्वः पत ऊँ।

उपरोक्त मंत्र को ग्रहण में सिद्ध कर नीम की टहनी या अपामार्गा से झाड़े का विधान है।

(5) चेचक रोग निवृत्ति मंत्र –

ऊँ श्रीं श्रां श्रँ श्रौ श्रं ऊँ खरस्यां दिगम्बरां।
विकट नयनां तोय स्यितां भजामि स्वाहा
स्वांगस्थां प्रचण्ड रुपां नमाम्यात्म विभूतये।

मिट्टी के पात्र में पवित्र जल को उपरोक्त मंत्र से गयारह बार अभिमंत्रित करें, और रोगी को पिला दें एवं शरीर के समस्त अंगों पर उस जल से छोटे दें साथ ही उल्लिखित मंत्र का जाप करते हुए मयूर पंख से रोगी को 11 (ग्यारह) बार झाड़े। रोग शान्त होने लगता है। रोग शान्ति तक प्रतिदिन प्रातः एवं सायं दोनों बार यह प्रयोग करते रहें। चेचक रोग के दुःखद भंयकर से शीघ्र ही मुक्ति मिल जाती है।

(6) नेत्र रोग निवृत्ति हेतु मंत्र –

शर्यातिं संकन्यांच च्यवनं शुक्रमश्विनौ।
संध्ययोः स्मरतां नित्यं तस्य चक्षुर्न नश्यति।।

उपरोक्त मंत्र पढ़कर नेत्र को जल से धुलवायें।

(7) शत्रुकृत् पीड़ा से मुक्ति हेतु मंत्र –

ऊँ क्लीम सर्वस्वरुपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे नमोऽस्तुते क्लीम् ऊँ।।[4]

यदि शत्रु अत्यधिक परेशान करे तो उपरोक्त दुर्गा मंत्र को रात्रि में अथवा प्रातः काल 41 दिन तक पाठ करें। 5 माला प्रतिदिन भगवती का ध्यान करके कम्बलासन पर बैठकर मन्त्र जाप करने से शत्रु शान्त रहेगा।

(8) सर्वकष्ट हारण मंत्र –

"ऊँ सर्वेश्वराय सर्व विध्न विनाशिने मधु सूदनायस्वाहा।"

उपरोक्त मंत्र को ग्रहण महा शिवरात्रि किंवा दीपावली की रात्रि मे भगवान शंकर जी का ध्यान करके भगवान शंकर पर चढ़ाये हुए पुष्प या विल्व मत्र को लाल कपड़े में बांधकर अपने पास रखने पर सर्वविध संकटों से शीर्घ मुक्ति प्राप्त हो जाएगी।

विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम्।
अन्यैश्च विविधै र्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या।।
प्रीतिमें क्रियते सास्मिन सकृत्सुचरिते श्रुते।
श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति।।[5]

(9) राजयक्ष्मा कुष्ठ निवारण हेतु मंत्र –

"पद्मासनः पद्मकरो द्विबाहुः
पद्मद्युतिः सप्त तुरङ्गवाहनः।
दिवाकरो लोक गुरुः किरीटी
मयि प्रसादं विदधातु देवः।

उपर्युक्त मंत्र को प्रातः काल प्रथम पहर में जब तक सूर्य की धूप विशेष तेज न हो, तब तक एकान्त में केवल एक वस्त्र पहन कर और मस्तक, हृदय उदर आदि प्रायः सभी अङ खुले रखकर पूर्वाभिमुख भगवान सूर्य के प्रकाश में खड़ा हो जाय। तदन्तर हाथ जोड़ नेत्र बन्द करके जगच्चक्षु भगवान भास्कर का ध्यान करने से राजयक्षा अथवा कुष्ठादि रोग शान्त हो जाते हैं।

(10) मृत्युंजय मंत्र –

ऊँ त्र्यंबकं यजामहे सुगंन्धिं पुष्टिवर्धनं।
उर्वारुकमिव बंधनान मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

पुराणोक्त मृम्युंजय मंत्र

मृत्युंजयाय रुद्राय नील कण्ठाय शम्भवे।
अमृतेशाय शवाय महादेवाय ते नमः।।

उपरोक्त मंत्र के जप अनुष्ठान से सभी प्रकार के दुःख भय, रोग, मृत्युभय आदि दूर होते हैं। इस मंत्र को शुक्राचार्य द्वारा आराधित 'मृत संजीवनी विद्या' के नाम से भी जाना जाता है। नारायणोपनिषद एवं मंत्र सार में "मृत्युर्विनिर्जितो यस्मात् तस्मान्य मृत्युंजप स्मतः" अर्थात् मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के कारण इस मंत्र को महामृत्युंजय कहा जाता है।

मन्त्र जप, भगवन्नाम जप तथा अनुष्ठान से मनुष्य स्वस्थ एवं निरोग रह कर दीर्घायु तथा मन और इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर आत्म संयम द्वारा स्वास्थ्य एवं आरोग्य के मार्ग पर बढ़ सकता है।

(1) श्रीमद्भागवद्गीता 11/25

(2) गीता 11/36

(3) शुक्ल यर्जुवेद 16/51

(4) श्री दुर्गा सप्तशती

(5) श्री दुर्गा सप्तशती 12/21-22

1. निरुक्त 3/2
2. संस्कृत हिन्दी कोश–पृष्ठ 90.
3. कारु रह ततो भिषगुपल प्रक्षिणी नना। 9/112/3 ऋग्वेद
4. वृहदाराण्यक उपनिषद–प्रथम अध्याय चतुर्थ ब्राह्मण–11 वीं कण्डिका
5. वृहदाराण्यक उपनिषद–प्रथम अध्याय चतुर्थ ब्राह्मण–11 वीं कण्डिका
6. वृहदाराण्यक उपनिषद–प्रथम अध्याय–चतुर्थ ब्राह्मण–12 वीं कण्डिका
7. वृहदाराण्यक उपनिषद–प्रथम अध्याय चतुर्थ ब्राह्मण–13 वीं कण्डिका
8. ऋग्वेद–पुरुष सूक्त–10/90/2
9. श्रीमद्भगवद गीता–4/13
10. म०भ० शान्ति पर्व–अध्याय–188
11. श्रीमद्भगवद गीता–18/41
12. अथर्ववेद–2/15/4

13. श्रीमद्भगवदगीता–18/42

14. श्रीमद् भगवद गीता–18/43

15. मनु स्मृति–1/89

16. तैत्तिरीय ब्राह्मण–1/5/9

17. श्रीमद्भगवदगीता–18/44

18. श्रीमद्भगवदगीता–18/44

19. तपो वै शूद्रः–रा०ब्रा०–13, 4, 2, 10

    तपसे शूद्रम्–जै०ब्रा० 3, 411

20. शूद्रे यदर्थे एनश्च कृमा वयम्–तै० ब्रा०–2,6,6,1

21. यजु०–18/48